कार्यालय प्राचार्य, शासकीय डॉ.वा.वा.पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
केन्द्रीय विद्यालय के पास, जेलरोड दुर्ग (छ.ग.)
पूर्व नाम-शासकीय कन्या महाविद्यालय,दुर्ग (छ.ग.) फोन 0788-2323773
Email- govtgirlspgcollege@gmail.com Website: www.govtgirlspgcollegedurg.ac.in
College Code : 1602

दुर्ग, दिनांक : 20.02.2026

--: प्रेस विज्ञप्ति :--

शासकीय डॉ.वा.वा.पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.) के भूगोल विभाग द्वारा दिनांक 17.02.2026 को महाविद्यालय प्राचार्य डॉ रंजना श्रीवास्तव के मार्ग दर्शन में शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। जिसमें बी.ए. अंतिम वर्ष के छात्राओं को महाविद्यालय से गरियाबंद जिला स्थित राजिव लोचन मंदिर राजिम जो कि 77 कि.मी. दूर उत्तरीय अंक्षाशीय विस्तार 20^0 57′ व पूर्वी देशान्तर 81^0 52′, घटारानी मंदिर 120 कि.मी दूर व जतमई मंदिर 110 कि.मी. की दूरी में स्थित स्थलों का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।

राजिव लोचन मंदिर :- राजिम स्थित राजिव लोचन मंदिर के भीतर दक्षिण कोशल के परवर्ती नल वंशीय शासक विलासतुंग का एक अभिलेख स्थापित है जिसमें विलासतुंग द्वारा अपने स्वर्गवासी पुत्र की पुण्याभिवृद्धि तथा उनकी स्मृति को अक्षुण बनाए रखने के लिए विष्णु के विशाल मंदिर के निर्माण करवाने की जानकारी मिली। जबकि दूसरा अभिलेंख कल्चुरी सामन्त जगतपालदेव का है जिसने राजिम में राम मंदिर का निर्माण करने एवं भगवान की नैवेद्य हेतु शाल्मलीय ग्राम के दान का प्रज्ञापन है। इसकी तिथि कल्चुरी सवंत 896 की माघ मास शुक्ल पक्ष की रथाष्टमी दिन बुधवार है। पुराभिलेखीय अध्ययन के आधार पर राजिव लोचन मंदिर को 700-725 ई. कि मध्य निर्मित माना जाता है। भगवान विष्णु को समर्पित इस देवालय की प्रसिद्ध राजीव लोचन मंदिर के नाम से है। जो एक पंचायतन परिसर में ऊँचे चबुतरे पर निर्मित है। इसमें प्रवेश के लिए उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं में सीढ़ियों से जुड़े हुए दो द्वार मंदिर की संरचना में गर्भगृह अन्तराल एवं स्तम्भ अधारित मंडप का संयोजन किया गया है। गर्भगृह में राजिव लोचन के नाम से सुज्ञात चतुर्भुजी भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापित है गर्भगृह के त्रिशाखा द्वार अत्यंत गहनता से उत्कीर्णन किया गया है। ललाट बिम्ब पर शेषशायी विष्णु का प्रभावकारी अंकन प्राप्त होता है। मंदिर का शिखर चार भूमियों में विभक्त एवं पिरामिड सदृश बनाया गया स्तंभ आधारित मंडल का निर्माण अपने आप में अनूठा है। स्तंभो पर पूर्ण संदेह नृसिंह, वराह, गंगा, यमुना, वैष्णवी, राम-लक्ष्मण का अंकन किया गया है।

घटारानी :- घटारानी अपनें सुन्दर जलप्रपात और प्राकृतिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है यहॉ का जल प्रपात पहाड़ियों से गिरते हुए अत्यंत मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। छात्राओं ने यहॉ जल प्रपात के निर्माण आस-पास के चट्टानों की बनावट जल प्रवाह और पर्यावर्णीय महत्व का अध्ययन किया। इसके साथ ही छात्राओं को यह भी बताया गया कि यह क्षेत्र पर्यटन के दृष्टि से कितना महत्वपूर्ण है और यहॉ पर्यटन के विकास की क्या संभावनाएं है।

जतमई :- गरियाबंद जिला स्थित जतमई माता का मंदिर स्थानीय लोगों की आस्था का प्रमुख केन्द्र है। मंदिर के आस-पास घने वन और सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलें यहॉ छात्राओं ने क्षेत्र की भौगोलिक संरचना वनस्पति और पर्यटन गतिविधयों का अवलोकन किया इसके बाद सभी छात्राओं ने जतमई जलप्रपात का भी अध्ययन किया जो मानसून में विशेष रूप से आकर्षक दिखाई देता है।

इस भ्रमण में डॉ. सुषमा यादव, श्री नितिन कुमार देवांगन एवं श्री विजय चन्द्राकर का योगदान रहा।

नोट- छात्रहित में प्रकाशन हेतु निवेदित

विभागाध्यक्ष
(डॉ. सुषमा यादव)

प्राचार्य
(डॉ. रंजना श्रीवास्तव)